आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:14/01/2023; Published:31/01/2023

कहानी

वियोगांतक

डॉ. संघमित्रा पृष्टि

मूल: मनोज दास (ओड़िआ)

वृद्ध डॉक्टर साहा ने बोलना जारी रखा- "तुम लेखक लोग कई दफा भूल जाते हो कि एक ट्रेजेडी के संघटित होने के लिए हर समय एक खलपात्र की आवश्यकता नहीं होती। 'प्राच्य आरोग्य निकेतन' से मेरे सेवानिवृत्ति के पश्चात कई मरीजों में से जो कुछ लंबी अवधि से मुझ पर आश्रित हैं, उनमें से सुमिता को तुम जानते हो। पंद्रह साल पहले वह और भी खूबसूरत थी। आँखों में हिरनी-सी सरलता। पिता-माता को वह बचपन से खोकर एक करीबी रिश्तेदार के यहाँ रह रही थी।

सुमित के रिश्तेदार तबादला के चलते इसी शहर में आए। उनके घर के बगल में एक दो मंजिला का मकान था। उसकी छत पर अनगिनत गुलाबों के पौधे थे। एक सुंदर लड़का बहुधा बगीचे में टहला करता तथा पौधों की देखभाल करता है। नन्ही-सी सुमिता ऊपर दृष्टि डाले गुलाबों को देखकर पुलकित होती और उस लड़के को देखकर हँसती। लड़का कदाचित एक ताजा गुलाब सुमिता की ओर फेंक देता था। सुमिता दौड़कर पकड़ लेती है। बेकस लोग बड़े स्नेह कंगाल होते हैं। सुमिता का बाहर दुनिया से यही प्रथम भावात्मक परिचय था।

सुमिता स्कूल में दाखिल हुई। दाखिला लेने के कुछ ही दिन बाद एक शिक्षिका के स्थानांतरण के उपलक्ष्य में छात्राओं ने स्कूल में एक विदाई समारोह का आयोजन किया। कुछ फूलों की जरूरत होने पर सुमिता ने कहा, 'मैं ताजे गुलाबों का एक गुच्छा ला सकती हूँ।' उस दिन तीसरे पहर हल्की बारिश हुई थी। चार बजे के बाद सभा शुरू होने वाली थी। तीन बजे वह भागती हुई घर आ गई है। संभवतः उसकी आश्रयदात्री से पास पड़ोसी के घर में से फूल लाने के लिए जिद करती, पर रिश्तेदार घर में ताला लगाकर कहीं बाहर गए हुए थे।

"सुमिता के मन में थोड़ा भी संदेह न था कि उसका वह किशोर दोस्त कहने मात्र से बगीचे के सारे गुलाब संभवत उस पर लूटा देगा। बस उससे मिलने व कहने में ही संकोच हो रहा था !

"संकोच के करण ही संभवतः सुमिता कुछ समय उधेड़बुन में फँसी थी। उधर सभा का समय नजदीक आ रहा है। वैसे ही अल्प परिचितों को अपना बना लेने का एक दुर्निवार रोमांच संभवतः उसके नन्हें पांवों को ऊर्जा दे रहा था। वह पड़ोसी के बरामदे में जाकर खड़ी हुई और कलिंग बेल बजाई। आवाज आई, 'ऊपर आ जाओ।'

सुमिता ऊपर गई। एक बड़ा-सा सुसज्जित कमरा। संभ्रांत माहौल। एक कोने में, कुर्सी पर बैठा है उसका परिचित लड़का। चेहरे पर विस्मय का भाव !

"मुझे कुछ गुलाब के फूल चाहिए"- सुमिता ने कहा ।

"बैठो, उस कुर्सी पर ! तुम्हारा नाम क्या है ?" – लड़के ने सुखद आश्चर्य से प्रश्न किया।

"मेरा नाम सुमिता है। और तुम्हारा ? मुझे कुछ गुलाब के फूल चाहिए।"

"तुम मुझे पहचानती हो ?"

"धत्!" सुमिता थोड़ी नाराजगी जताने जैसे बोली, सिर्फ नाम नहीं जानती, इसका अर्थ यह नहीं कि मैं तुम्हें नहीं पहचानती ? फिर कैसे मैं इधर आई ? तुम्हें तो हर रोज देखती हूँ।"

"मैं भी हर रोज तुम्हें देखता हूँ।"

"तुम्हारा बगीचा बहुत ही सुंदर है।"

"सच.....? तुम भी बहुत सुंदर हो।"

"छोड़ो भी ! मुझे कुछ गुलाब चाहिए। कभी-कभार एकाध जैसा ताजा गुलाब तुमने मेरी ओर फेंका था, वैसे ही दस-बारह चाहिए !"

"खूबसूरत।"

"क्या खूबसूरत ! फूल दो न ! चलो, छत पर चलते हैं !"

"जाएँगे ?"

"हाँ, जल्दी चलो !"

"सच में लड़का कुर्सी छोड़ छत पर जाने के लिए तैयार हुआ एवं उसकी कमर पर लपेटा हुआ चादर हटाया। फिर अचानक निराश आँखों से सुमिता की ओर मुखातिब होकर कहा, "कैसे जाऊँ ?"

"क्यों ?" कहते हुए सुमिता ने देखा कि उसकी घुटनों के नीचे की दोनों टांगें नहीं हैं !

"सुमिता 'अरे, अरे' कहते ही लड़का अचानक ठहाका मार कर हँसने लगा। सुमिता तेजी से कमरे से उतरती हुई अपने घर की ओर भागी। तब तक भी उसके रिश्तेदार वापस लौटे नहीं थे। वह दरवाजे के पास ही मूर्छित होकर गिर गई।

'आरोग्य निकेतन' में उसे होश आया। हाँ, स्वाभाविक स्थिति में लोटने के लिए उसे काफी समय लगा।

"बात यह है कि उस पड़ोस के घर में दो जुड़वा भाई थे। देखने में एक जैसे। बाल्यावस्था में दुर्घटना से एक भाई ने अपनी दोनों टांगें खो दी थीं। सुमिता हर रोज जिसे देखती है वह दूसरा भाई था। उस दिन वह अपाहिज लड़का सुमिता को प्रताड़ित करने की मंशा से बातचीत कर रहा था, ऐसा नहीं है। मेरी छानबीन के पश्चात मैंने पाया कि सुमिता पहले से कभी उसे न देखने पर भी उस लड़के ने खिड़की से कई बार सुमिता को देखा है। अपने तनहा जीवन में उस दिन अचानक सुमिता को देखकर अपनी दुरवस्था को भुलाकर पल भर के लिए स्वयं को अपने भाई-सा मानकर सुमिता की इच्छापूर्ति के लिए बेचैन हो गया है। परंतु चलने की कोशिश करने पर उसका मोहभंग हुआ है। उसी समय उसका ठहाका मारकर हँसना उसके रोने का रूपांतर मात्र है।

सुमिता अभी भी जिस किसी भी नए व्यक्ति से मिलती उसके पैरों को संदिग्ध दृष्टि से देखती है। उसने दिन-पर-दिन स्वप्नमय गुलाब के वन में विचरण करते हुए जिस लड़के को देखा था, अचानक उसके पैरों का न होना जानकर उसे जो असह्य मानसिक आघात हुआ, उससे वह अब तक पूरी तरह उबर नहीं पाई है। नहीं तो बाकी मामले में वह सामान्य ही मानी जाएगी।

"परंतु उस अपाहिज लड़का दुरुस्त न हो सका। उन्माद हँसी और रोने के चलते तेज बुखार के कारण उसकी मौत हो गई।"

डॉक्टर साहा ने फिर कहा, "आश्चर्य ! नहीं, आश्चर्य की बात ही क्या है !"

****